अङ्क ५ वर्ष ४५ | "ऋषि-जीवन" वृन्दावन मई—१९८४ | वार्षिक मूल्य १०) रुपया

इन्दु से बदन पर, मीन से दृगन पर,
विज्जु से दसन पर छबि दृगन खगी रहै।
मन्द मुस्कान पर, बांसुरी की तान पर,
पट फहरान पर मो मती ठगी रहै॥
अधरन लाल पर, कण्ठ बनमाल पर,
"लाल वलवीर" उर ज्योति सी जगी रहै।
मुक्त से नखन पर, कञ्ज से चरन पर,
सांवरे ललन! मोरी लगन ही लगी रहै॥

सम्पादकीय

विशेषांक पर विभिन्न प्रतिक्रियायें प्राप्त हो रही हैं। उनमें से एक प्रतिक्रिया प्रकाशित कर रहे हैं। कई जिज्ञासु पाठकों ने मुख पृष्ठ के चित्रों की उपयुक्तता पूछी है। यद्यपि चित्रों से बातें स्पष्ट हैं फिर भी संक्षेप में कुछ विवरण दिया जा रहा है।

मुख पृष्ठ के ब्लाक में ६ चित्र हैं। इनमें से पहला चित्र भगवान शंकर का है। जो राम के परम भक्त हैं। सती ने जब सीता जी का रूप धारण किया तब भगवान शंकर को बहुत क्षोभ हुआ और उसी समय से सती जी का पत्नि रूप से त्याग कर दिया और बाँयें स्थान पर सामने स्थान दिया इतना ही नहीं उसी समय से सती जी को सर्वथा के लिये छोड़ दिया और जब दूसरा जन्म धारण कर सती जी ने घोर तपस्या की तब पत्नि रूप में स्वीकार किया कहानी सर्वविदित है कि शिव पार्वती का मिलन हुआ।

दूसरा चित्र भक्त शिरोमणि नारद जी का है जो रात दिन प्रभु का गुणगान करते हैं। उनकी वीणा सर्वदा राम नाम से झंकृत होती रहती है।

तीसरा चित्र भक्त ध्रुव का है जिन्होंने अपनी तपस्या से प्रभु का साक्षात् दर्शन किया और सारी सांसारिकता छोड़ कर 'ॐ नमों भगवते वासुदेवाय' का व्रत धारण किया।

भक्त प्रह्लाद की कथा तो सबको मालुम है कि उन्हें राम नाम से प्रेम था। घोर यातनायें सह कर भी राम का नाम नहीं छोड़ा और अन्त में उनके दुख निवारणार्थ भगवान प्रगट हुये।

नीचे के दोनों चित्र राम और विष्णु के वाहनों के हैं। हनुमान जी में केवल राम नाम ही निवास करता था। यहाँ तक इन्होंने अपनी छाती फाड़कर यह दिखा दिया कि वहां भी राम का निवास है।

छठा चित्र गरुण जी के विष्णु वाहन का है। जो अपनी सेवा से भगवान को सर्वदा सन्तुष्ट करते रहते हैं। और सर्वदा उन्हीं के पास रहते हैं।

वैसे तो प्रभु के भक्तों की संख्या अपरिमित है। पर उनमें से इन्हीं छः भक्त शिरोमणियों का चयन किया गया है। और उन सबको ऋषि जीवन से मिलाया गया है। ताकि उनका जीवन 'ऋषि-जीवन, मे अपना संबन्ध रखे वास्तव में ऋषि जीवन में भक्ति का प्रमुख स्थान है। तथा सभी के लिये अनुकरणीय है।

—सम्पादक

जीवन-कण

मनुष्य को अपने जीवन में कुछ आदर्श रखने चाहिये जिनके आधार पर उसे सुख और शान्ति मिल सके। सभी को मान अपमान का बहुत ख्याल रहता है। पर जिसने मान-अपमान में समता देखी है उसका जीवन धन्य है। जीवन में तरह-तरह की स्थितियाँ आती हैं कभी उसका मान किया जाता है। और कभी अपमान। मान पाने की लिप्सा प्राय: सभी में देखी गयी है पर मान पाकर प्रसन्न और अपमान पाकर क्षुव्ध नहीं होना चाहिये कहा गया है कि मान पाने की भावना मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है। और अनेक अवस्थाओं में घोर सन्ताप और दु ख का कारण वन जाती है। इसी प्रकार मोह सभी पापों का मूल कारण है। सांसारिक क्या वल्कि पारमार्थिक सभी प्रकार के मोह त्याज्य हैं। इनसे व्यक्ति को वचना चाहिये।

संसार में सुख व दु:ख दोनों मिलते रहते हैं। पर जिन्होंने सुख-दु:ख की भावना को जीत लिया है वो वास्तव में धन्य हैं। इसी प्रकार किसी भी प्रसंग में दोषों को ग्रहण नहीं करना चाहिये और आध्यात्मिक चिंतन करना चाहिये।

कामना दु:ख की जननी है, सभी प्रकार की कामनायें छोड़ कर जो आत्मचिन्तन में लीन है वो व्यक्ति भी धन्य है। और किसी भी स्थिति में उसे कष्ट उठाना नहीं पड़ता।

हमारे जीवन में द्वन्द्व होते रहते हैं। वाहर तो खटपट है ही पर अन्दर भी खटपट होती रहती है। इस सारी खटपट से छुटकारा तभी मिल सकता है जव इन द्वन्द्वों से अलग रहा जाये और ऐसी शान्ति का अनुभव किया जाये जिसमें खटपट का कोई स्थान न हो।

सुख और दुख अवश्यम्भावी है। पर उनसे विचलित होना व्यक्ति को पतन के गर्त में ले जाता है। आदर्श स्थिति तो वो है जिसमें सुख-दु:ख को एकसा माना जाये सुख में अति प्रसन्न होना अथवा दुख में विचलित होना शोभा नहीं देते दोनों स्थितियों को समान रूप से समझा जाये और सन्तुलन नहीं टूटने पाये यद्यपि ये सभी बातें कठिन हैं। पर हमारा प्रयास समानता की ओर रखा जाये और जीवन में सभी परिस्थितियों में एक रूपता रखी जाये हम इस ओर जितनी भी चेष्टा करेंगे उतना ही आदर्श की ओर झुकाव रहेगा और शान्ति की ओर गमन होगा जो जीवन का परम उद्देश्य है। इन्हीं को परमपद की प्राप्ति होती है।

—मुक्त

घूँस या घूँसा

–राधारानी

★

आज रिश्वत का हर ओर बोल वाला है हर काम विना पैसे नहीं होता चाहे जायज ही क्यों ना हो। हर इन्सान की रगों में पैसे का मोल वढ़ गया, होगा क्यों न मँहगाई पर जब रोक नहीं तो घर के खर्च चलाने के लिये हम लोग कहाँ से रुपया लायें। अगर मँहगाई रुक जाती तो पैसे का मूल्य घटता भी नहीं इतना, जितना हो गया है सभी परेशान हैं फिर भी काम नहीं चलता।

१—न्याय विक रहा है अन्याय खरीदा जा रहा है।

२—हत्या, डकैती के केस पैसा देकर छूट जाते हैं।

३—असली जुर्म करने वालों पर पुलिस भी पैसा पाकर नजर नहीं डालती निर्दोष फँसते हैं।

४—अस्पताल की अच्छी दवायें स्टोरों पर विक जाती हैं। मरीजों को क्या मिलेगी।

५—डाक्टर लोग बड़ी-वड़ी सेलरी पाने वाले वेलगाम कर्मचारी कर्तव्यों को भुला बैठे पैसे के लिए।

६—विभागों में टैन्डर खोलकर कम मूल्य के वनवा कर पास कर दिए जाते हैं पसा लेकर तभी इमारतें-लिफाफा वनती हैं। ये भारत में देन है—

७—डाक विभाग वाले ओवरटाइम के चक्कर में रहते हैं तार भी पत्रों से देर में पहुँचते हैं।

८—अधिक टेलीफून करने वालों के विल कम और कम करने वालों का विल ज्यादा कमाल है।

९—पैसा दो इम्तहान के नम्वर वढ़वा लो और मेहनती छात्र पीछे रह जाते हैं पैसे की जीत है।

१०—विजली विभाग में विजली की कटौती वढ़ती जा रही है किन्तु मिनिमम चार्ज उतना ही है। अधिक विजली खर्च करने वालों के विल कम रहते हैं।

११—मेरे मामा जी जज है उनके यहाँ ३०२/३०७ का केस था जिस दिन फैसला होना था पहले दिन फोन आया साहव ५० हजार ले लो या फिर जान से हाथ धो बैठोगे। मामा जी ने केस ट्रान्सफर करा दिया ये रिश्वत का घूँसा वड़ी ताकत रखता है।

ऋषि जीवन 'भक्त चरितांक' : मेरी प्रतिक्रिया

—डॉ० लक्ष्मीनारायण गुप्त अर्थशास्त्र विभाग
डूंगर महाविद्यालय, वीकानेर

प्रिय महोदय,

ऋषि जीवन के भक्त चरितांक की प्रति मुझे प्राप्त हुई, अंक प्राप्त कर प्रसन्नता हुई । अंक में सम्मिलित विषय-सामग्री, लेखों का चयन एवं मुद्रण प्रशंसनीय है एवं इससे संवद्ध सभी महानुभावों को मैं अन्तस्तल से धन्यवाद प्रेषित कर रहा हूँ ।

प्रस्तुत अङ्क में बुद्धिजीवी एवं धर्म गुरुओं के उच्चकोटि के लेख हैं जिनमें व्यावहारिकता का पुट अधिक है जो सहज रूप से पाठक को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । इस प्रकार के साहित्य का सृजन निश्चय ही आज के युग में अपेक्षित है विशेषकर इस सन्दर्भ में जबकि समाज में नतिक मूल्यों का निरंतर ह्रास होता चला जा रहा है, समाज विघटन की ओर अग्रसर हो रहा है एवं उद्दण्डता का साम्राज्य वढ़ता जा रहा है । धन-लोलुपता तथा भौतिकता के पाश में मानव जकड़ता जा रहा है । पश्चिमी सभ्यता-डिस्को सभ्यता का रंग चढ़ता जा रहा है—(मैं आधुनिकता के विरोध में नहीं—परन्तु जिसमें नैतिकता को कोई स्थान नहीं, वह निश्चय ही त्याज्य है एवं वहिष्कार के योग्य है) ऐसी विषम परिस्थितियों में हम अपनी संस्कृति में निहित मूल्यों को विस्मृत करते जा रहे हैं, उनका क्षय हो रहा है और समाज दिशा भूल रहा हैं, वह दिशा जो वांछनीय है ।

हमें तिमिर से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य कौन करे ? यह एक बुनियादी एवं विचारणीय विन्दु है । समाज में उच्छृंखलता का वातावरण पनप रहा है वह किसी भाई-वहिन से छुपा हुआ नहीं है, परन्तु इसके लिये दोषी कौन ? उत्तरदायित्व किस पर डाला जावे ? इस पर हमें मनन करना चाहिये तथा अपने आप से यह पूछें, यह मेरा नम्र निवेदन है । प्रस्तुत प्रकार का साहित्य निश्चय ही नौका को पतवार का काम देती है । जो व्यक्ति को ठीक रास्ते – किनारे पर ले जाने मे सहायक है । एवं ईश्वर के प्रति अनुराग उत्पन्न करने, सर्व शक्तिमान के प्रति श्रद्धा वढ़ाने एवं भारतीय संस्कृति के विखरे—मूल्यों की पुनः स्थापना हेतु सक्षम बनाती है ।

इस अङ्क में अनेक वहुरंगी चित्रों ने इसे और भी अधिक रोचक एवं आकर्षक वना दिया है । मेरी आठ वर्षीय पुत्री को यह अङ्क इतना भाया कि वह इसे कई बार देखती है तथा अपनी सामर्थ्यानुसार अङ्क का पठन भी करती है । अतएव एक ओर यह वयस्कों के लिये नैतिक-संवल प्रदान करता है तो दूसरी ओर नई-पौध बालकों में अपनी संस्कृति के प्रति लगाव उत्पन्न करती है, एवं नैतिकता के संस्कार

डालती है। वस्तुतः मानव-मूल्य आज के विषैले वातावरण में कुछ कुंद हो गये हैं, लुप्त हो रहे हैं एवं उनकी आभा को जो क्षति हुई है उसे पुनः प्रतिष्ठित किया जाना न केवल सार्थक ही है अपितु नितांत अपेक्षित भी।

प्रस्तुत साहित्य का मुख्य ध्येय मात्र यही है कि वह हमें ईश्वर के निकट ले जावे। इस दौड़ में हम कितने निकट आते हैं यह दायित्व हमारे स्वयं पर है—जो हमारी निष्ठा तथा विश्वास पर अवलंबित है। हमें इस प्रकार की सामग्री से आत्म वल मिलता है एवं चिंतन के लिये भरपूर सामग्री भी। निश्चय ही साधु-सन्यासियों के उपक्रम पारिवारिक व्यक्तियों की तुलना में कुछ भिन्न होते हैं। इस अङ्क में जिन लेखों को सम्मिलित किया है, चूँकि उनमें व्यावहारिकता का पुट अधिक है, फलतः वे अधिक प्रभावशाली हैं। कुछ उपदेशात्मक-सूत्र लेख भी हैं। यदि उनमें से हम किसी एक सूत्र को अपने जीवन में पिरो सकें, दैनिक जीवन में ढाल सकें। तो समाज तथा अपने परिवार की कितनी भलाई कर सकेंगे?

वर्तमान विकट परिस्थितियों में जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है जो वांछनीय प्रभाव डाल सके—मानवीय मूल्यों को नैतिकता का वाना पहना कर उसकी जड़ों को सुदृढ़ कर सके—ऐसे साहित्य की हमें आवश्यकता है एवं इसके प्रकाशन का हम स्वागत करेंगे। प्रस्तुत ऋषि जीवन का 'भक्त चरितांक' इस दिशा में एक सशक्त श्रृंखला का निर्वाह करती है। पिछले अनेक वर्षों से ऋषि जीवन द्वारा समाज की जो अमूल्य सेवा की जा रही है, वस्तुतः वह श्लाघनीय है। अस्तु

❋

अनमोल बोल

१ - इन्द्रियों का स्वामी रहने वाला मानव सदैव सदाचारी रहता है प्रगतिशील प्रतिभाशाली और लोकप्रिय होता है लम्बी आयु पाता है।

२ नम्रता से असम्भव कार्य भी सुलभ है कटुता से सुलभ कार्य भी दुर्लभ वन जाते हैं।

३- अच्छे स्वभाव से सुन्दरता का अभाव नहीं खटकता और सुन्दर मानव जव असुन्दर कार्य करता है तो उसकी तरफ कोई भी सहानुभूति नहीं रखता। सुन्दरता का क्या मोल है।

४- हिम्मत हारने वाला कभी भी जीवन में सफल नहीं होता। स्वावलम्वी—आत्मविश्वासी मानव का हर काम सिद्ध होता है। सुखी रहता है।

५- सदैव झूँठा फरेवी इन्सान मीठा जहर होता है किन्तु फलता-फूलता नहीं है। कदम-कदम पर उसे जलालत में जलना पड़ता है। धीरे-धीरे जिन्दा ही उसकी चिता जलती है।

६—यदि कुछ पाना चाहते हो तो पहले देना सीखो। त्याग, सेवाभाव, परमार्थ से जीना कठिन कुछ भी नहीं वस विश्वास चाहिए ऐसी प्रकृति बनालें सदैव सुखी रहेंगे।

डा० विमलारानी, बुलन्दशहर

मानव जीवन—जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना।
दानव जीवन जहाँ कुमति तहाँ विपति निधाना।। } विचार करो ! कौनसा जीवन बनाना है ?

जीवन को सुखी बनाने के साधन

—कान्तिप्रसाद अग्रवाल

□

"आत्मनः प्रतिकूलानि परेषाम् न समाचरेत्।"

जो व्यवहार अपने लिए चाहते हो तुम भी वही व्यवहार दूसरों के प्रति करो।

जो सन्तान माता-पिता, गुरुजनों व बड़ों को श्रद्धा से दैनिक सेवा व नमस्कार-प्रणाम करती हैं उन्हें निश्चित दीर्घ आयु, विद्या, यश व बल चारों पदार्थ प्राप्त होते हैं। शास्त्रों में अनेक उदाहरण, माता पिता की सेवा करने से सुख-शान्ति प्राप्ति के लिये मिलते हैं।

अनादि काल से सभी प्राणी पुत्र तथा पुत्री के रूप में जन्म लेते आये हैं। पुत्र को पिता, पुत्री को माता होना है। जो आज किसी की बहू है, कल उसे सास भी बनना है। हम जो घर-घर में कलह अशान्ति एवं दुःख-दारिद्रय देख रहे हैं, अनुशासन व मर्यादाओं का पालन न करने से आपस में प्रेम समाप्त हो रहा है, इसका मूल कारण अपने कर्तव्यों का पालन न करना ही है। सत् शिक्षा, सत् साहित्य व आचार विचार, सात्विक शुद्धाहार का ठीक-ठीक पालन न करने से ही समस्त प्राणी दुःख से सन्तप्त हैं। आशा है, इन साधनों से भूले-भटकों को प्रेरणा व सुख-शान्ति अवश्य मिलेगी। इन विचारों का प्रचार प्रसार समाज के हित में है। इसे स्वयं पढ़कर व्यापक रूप से दूसरों को भी सुनावें।

सन्तान इन विचारों से सुख-शान्ति प्राप्त कर सकती है—

१—मेरे प्यारे बच्चों ! तुम सब कुछ भूल जाना, परन्तु अपने माता-पिता की सेवा करना कभी न भूलना, क्योंकि इनके तुम पर अनेक उपकार हैं। अपना जीवन सुखी बनाने के लिए इन्हें निरन्तर याद रखना।

२—न जाने कितने देवी-देवताओं की मनौती मनाने के बाद ही माता-पिता को तुम्हारा मुख देखने को मिला है, ऐसे पूज्य माता पिता एवं गुरुजनों के कलेजों को उद्दण्ड बनकर छेदना व कुचलना नहीं।

३—भूखे प्यासे रहकर भी अपने मुंह का ग्रास तुम्हारे मुख में देकर माता-पिता ने पाला-पोषा है। इस प्रकार अमृत का दान करने वालों के प्रति कठोर वचन व दुर्व्यवहार न करना तथा इनकी आत्मा को कभी न दुखाना।

४ माता-पिता ने तुम्हारी सभी इच्छायें पूरी की हैं—इसे कभी न भूलना। तुम भी इनकी भावनाओं को कभी मत ठुकराना।

५—भले ही तुम लाखों रुपये कमाते हो, यदि तुमने माता-पिता की आत्मा को अपने सद्-व्यवहार व आचरण से तृप्त नहीं किया तो तुम्हारे कमाये हुए लाखों रुपये राख के ढेर के समान हैं। जो सभी बेकार हैं।

६—यदि तुम अपनी सन्तान से सेवा की आशा करते हो, तो तुम जिनकी सन्तान हो, उनकी सेवा तन-मन धन से करना तुम्हारा भी पुनीत कर्तव्य हो जाता है, तभी अपने सद्व्यवहार से सुखी जीवन प्राप्त कर सकोगे।

७—जो पुत्र माता-पिता को सुख-शान्ति देते हैं, उसके शुभ फल उन्हें इसी जीवन में भी अवश्य मिल जाते हैं।

८—याद रक्खो—तुम्हारे माता-पिता ने स्वयं गीले वस्त्रों में सोकर तुम्हें सूखे वस्त्रों पर सुलाया है। उनके अमृत रस से भरे नेत्रों को भूलकर भी अपने दुर्व्यवहार के कारण आँसुओं से गीले कभी मत होने देना।

९—माता-पिता ने तुम्हारे मार्ग में सदा प्रेम-पुष्प बिछाये हैं, उनके मार्ग में कभी काँटे न बिछाना व इन्हें दु:ख न देना।

१०—धन खर्च करने से भले ही सब कुछ मिल जाय, परन्तु माता-पिता की सहिष्णुता व दुलार कभी भी नहीं मिल सकते।

११—माता-पिता के सेवक निर्धनता में भी सुखी हैं, सेवा न करने वाले धनी होते हुए भी दुखी रहते हैं।

१२—जो पुत्र माता-पिता की सेवा आज्ञा-पालन नहीं करते, उनको प्यार व शुभाशीष कभी नहीं मिल पाते।

१३—जो पुत्र माता-पिता को दु:ख देते हैं, जीवन भर उनको मानसिक क्लेश ही बने रहते हैं तथा वे सदैव अशान्त ही रहते हैं।

१४—जो पुत्र माता-पिता का अनादर करते हैं, वे परिवार, समाज, इष्ट मित्रों में कभी आदर नहीं पा सकते।

१५—यदि तुम अपने माता-पिता पर श्रद्धा नहीं रखते, तो तुम्हारा पूजा-पाठ व भक्ति करना सभी निरर्थक है, केवल ढोंग है।

१६—वास्तव में वही सन्तान सराहनीय है जो माता-पिता गुरुजनों व बड़ों में निष्ठा व श्रद्धा रखती है। (मातृ-पितृ-आचार्य देवो भव)

बड़ों का पुनीत कर्तव्य

माता-पिता अपने बच्चों से पाँच वर्ष तक दुलार-प्यार करें, पन्द्रह वर्ष की आयु तक ताड़ना में रक्खें तथा सोलहवें वर्ष से मित्र जसा व्यवहार करें। माता-पिता एवं सास-ससुर व बड़ों का भी आवश्यक कर्तव्य हो जाता है कि वे घर में अपना सम्मान बनाये रखने के लिए सन्तान के विचारों पर भी अवश्य

ध्यान दें तभी वे अच्छी सन्तान व सुख की आशा कर सकते हैं। यदि बच्चों को योग्य बनाना है तो स्वयं अपने सुन्दर आचरण बनायें और अपने पूर्वजों की मान-मर्यादाओं का स्वयं भी पालन करें तथा अपनी सन्तान से करायें। बड़ा भाई पिता तुल्य है, छोटा भाई पुत्र तुल्य है। इसलिये ये विचार भ्राताओं पर भी लागू होते हैं। सभी अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करें, तभी देश का कल्याण सम्भव है।-

कबीरा जब हम पैदा हुए, जग हँसा हम रोए।
करनी ऐसी कर चलो, हम हँसे जग रोए॥

नोट· अन्न, जल, स्थान, साहित्य, संगति व कमाई के पैसे का प्रभाव मन पर अवश्य पड़ता है। इनका दुरुपयोग करने से सारा संसार दुखी है।

१४५, रंजीतपुरी, सदर मेरठ—२५०००१

अमृत-वाणी

डॉ० विमलारानी, बुलन्दशहर

⊙

सेहत हम स्वयं बिगाड़ रहे हैं खान पान में हमें जो पसन्द है वह सेहत के लिए हितकारी नहीं है तभी तो हम निरोगी नहीं रहते हैं। यदि आप चटपटे मसालेदार खान-पान का स्वाद छोड़कर सेहत की तरफ ध्यान दें तो घाटे में नहीं रहेंगे १-२ माह ये दिनचर्या बना देखें।

१— प्रातः नाश्ते में एक पाव दूध या आधी पाव दूध एक छटांक भुने चनों के साथ लें सेहत के लिए ये बड़ा हितकारी है। प्रातः का ये पर्याप्त नाश्ता है।

२—दोपहर खाने में दफ्तर में खायें या घर २-३ चपाती सब्जी या दाल सलाद के साथ लें।

३—तीन चार बजे कोई फल ले सकते हैं या जूस

४ शाम को मन करे तो चाय ले लें।

५—रात को ७-८ बजे तक भोजन कर लें जो पसन्द हो। खाकर टहलना अच्छा है ये ध्यान रखें खाकर एक दम सोना ठीक नहीं।

६—पानी दिन में प्रचुर मात्रा में पीयें।

७ -चाय काफी धूम्रपान मदिरापान का जहाँ तक सम्भव हो से दूर ही रहिएगा। पान भी कम लें पान में तम्बाकू खाना सेहत के लिए ठीक नहीं।

८- जाड़ों की ऋतु में तेलमालिश शरीर की जरूर करें और हल्का व्यायाम भी करना चाहिए। यदि आपने ये चर्या रखी तो निरोगी रहेंगे।

उद्बोधन

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ॥

मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ॥

विधि का विधान जान, हानि-लाभ सहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये । सीताराम..........

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही, जो श्रीरामजी को भायेगा ॥

फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये । सीताराम..........

जीवन की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे, चाहे झौंपड़ी में वास दे ॥

सारन को सार एक, राम राम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये । सीताराम..........

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक रामजी से, दूजे नाता तोड़ दे ॥

साधू संग राम रंग, अङ्ग-अङ्ग रंगिये ।
काम—रस त्याग प्यारे, राम—रस पीजिये । सीताराम..........

आपा भेटै हरि भजै, तन मन तजै विकार ।
निर्वैरी सब जीव सूं, 'दादू' यही मत सार ॥

❖ १४५, रंजीतपुरी, सदर मेरठ

श्रीब्रह्मगायत्री

—श्रीरवीन्द्रनाथ गुरु

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ॐ जिसका प्रतीक है और सत् चित् आनन्दस्वरूप जो है तथा जो हमारी बुद्धियों को अन्तर्यामी रूप से प्रेरित करता है, उस जगदुत्पादक देवके वरणीय (आदरणीय) तेजका हम ध्यान करते हैं।'

अनादिकाल से महामन्त्र गायत्रीकी महिमा वर्णन होते आ रहे हैं। चारों वेद गायत्री मन्त्र के ही विस्तार हैं। वैदिकमन्त्रशिरोमणि गायत्रीका चिन्तन कर असंख्य लोग अब भी लाभान्वित हो रहे हैं। वयोज्ञानतपोवृद्ध पं० श्रीराम शर्माजी आचार्य के मन्त्रप्रसार में अद्वितीयसहयोग है ही अद्वैतभावकी सम्यगुपब्धिके लिये भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठप्रतीक ब्रह्मगायत्री जप से भारतीय ब्राह्मण प्रत्यह स्वीय यथार्थस्वरूपका सन्धान लेता है। गीतामें भगवान् श्रीकृष्णने कहा है—

"गायत्री छन्दसामहम्" (विभूतियोग) आर्य ऋषियोंके सर्वश्रेष्ठ गम्भीर अनुभूतिके वाहन गायत्रीतत्त्वमें विश्वका समग्रदर्शन एवं विज्ञान प्रतिष्ठित है। परमात्माके (सवितु र्वरेण्यं भर्गः) साथ जीवात्मा का बुद्धितत्त्व के (धियो यो नः धियो यो नः) प्रचोदनात्मक आन्तरिक सम्बन्ध निहित है या जीवात्मा के साथ परमात्मा का साम्य और ऐक्य सुनिश्चित है। ["भङ्कार" ७।७]

ब्रह्माण्डमें जो कुछ है, वह गायत्री है 'गायत्री वा इदं सर्वम्' (छान्दोग्योपनिषद् ३।१२।१)

गायत्री, सावित्री, महामन्त्र, वेदमाता प्रभृति नाम से प्रसिद्ध श्रीब्रह्मगायत्री का जपचिन्तन से महर्षि वाल्मीकि गायत्री-बीजमय श्रीमद्रामायण, श्रीव्यासदेव महाभारत, पुराण का निर्माण पूर्वक नित्यस्मरणीय हैं। रामायणके २४ हजार श्लोक हैं। प्रत्येक सहस्रके बाद गायत्र्यक्षर मिलता है। जगह-जगह मन्त्र सम्बन्धी श्लोक भी दृष्टिगोचर होता है। मतङ्गवन में गायत्री मन्त्र के जप से विशुद्ध हुए सिद्ध महर्षियों ने वही अग्नि में मन्त्रोच्चारण के साथ देहरूपी पञ्जर को होम दिया था। कारणवश सायं संन्ध्या या प्रातः सन्ध्या के काललोप से साधक मानसिक खेदान्वित होता है। इस कलियुग में मानसिक पवित्रता सर्वोपरि है। अतएव काललोप होने पर भी सन्ध्याकार्य अवश्य करना चाहिये। निष्काम कर्मयोगी के लिये कालदोष क्षम्य है।

भागवत के प्रथम तथा अन्तिम श्लोक में गायत्री का ही पाद है। प्रथम में ही ब्रह्मगायत्री का पूरा वर्णन है जो इस प्रकार है।

सवितुः=जन्माद्यस्य यतः। देवस्य=स्वराट्। वरेण्यं भर्गः=धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुछकम्। धियो यो नः इत्यादि=तेने ब्रह्म हृदा आदि। धीमहि=धीमहि। अन्त में भी है। 'कल्याण' भागवताङ्क

सत्यं परं धीमहि पर अधिष्ठित होने के कारण श्रीमद्भागवत को गायत्री का भाष्य एवं व्याख्या कहा गया है।

गायत्री भाष्यरूपोऽसौ वेदार्थपरिबृंहितः॥ (गरुड़पुराण)

'यह गायत्री का भाष्य है और समस्त वेदों के अर्थ को धारण करने वाला है।

श्रीब्रह्मगायत्री में सात्विक बुद्धि एवं परमात्मा की प्राप्ति की प्रार्थना है। श्रीमद्भागवत में भी वही प्रकट है। वीच में भी सत्य स्तुति निहित है।

सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्य योनिं निहितञ्च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृतसत्यनेत्रं सत्यात्मक त्वां शरणं प्रपन्नाः॥ (दशमस्कन्ध)

'प्रभो! आप सत्यसङ्कल्प हैं। सत्य ही आपकी प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन है। सृष्टि के पूर्व, प्रलय के पश्चात् और संसार की स्थिति के समय—इन असत्य अवस्थाओं में भी आप सत्य हैं। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँच दृश्यमान सत्यों के आप ही कारण हैं। और उनमें अन्तर्यामीरूप से विराजमान भी हैं। आप इस दृश्यमान जगत् के परमार्थस्वरूप हैं। आप ही मधुरवाणी और समदर्शन के प्रवर्तक हैं। भगवन्! आप तो वस, सत्यस्वरूप ही हैं। हम सब आपकी शरण में आये हैं।

भागवत में भगवान् श्रीकृष्ण की आदर्श प्रातश्चरण में कहा गया है।

गोविन्द सन्ध्या उपासने। गायत्री जपन्ति मउने॥
[उड़िया भाशा में—श्रीजगन्नाथदासजीकृत पद्यानुवाद]

अर्थात् सन्ध्या उपासना में भगवान् श्रीगोविन्द ब्रह्मगायत्री का मानस जप करते थे।

अतएव भगवान् श्रीकृष्ण के भक्तों के लिये ब्रह्मगायत्री न जपना अनुचित है। द्विजातियों को अवश्य गायत्री जप करना चाहिये। श्रीकृष्णस्वरूप अनन्तश्री विभूषित प० पू० स्वामी अखण्डानन्दसरस्वती जी महाराज के शब्दों में ही सुनिये—

'यह देखा गया है कि सन्ध्या न करने वालों की अपेक्षा सन्ध्या करने वाले विद्यार्थी अधिक समझदार होते हैं। भगवान् सविता उनकी बुद्धि शुद्ध कर देते हैं।'

आप स्वयं ही पूर्वाश्रम में गायत्रीपुरश्चरण से सिद्धि लाभकर चुके हैं जिससे सर्वशास्त्रार्थवोधन में दक्ष हैं। रासपञ्चाध्यायी में (दशम स्कन्ध) ब्रह्मगायत्री सम्पूर्णतः प्रकटित है। तत्त्वतः भागवत एवं ब्रह्मगायत्री एक ही है। श्रीमद्देवी भागवत में भी वही गायत्री अपने रहस्यों सहित विद्यमान है।

ॐ सर्वचैतन्यरूपां तामाद्यां विद्यां च धीमहि। बुद्धि या नः प्रचोदयात्॥ से प्रारम्भ होकर सच्चिदानन्दरूपां तां गायत्रीप्रतिपादिताम्। नमामि 'ह्रींमयीं देवीं धियो यो नः प्रचोदयात्॥

पर देवी भागवत सम्पूर्ण होने से यह भी गायत्री भाष्यरूप है। वस्तुतः एक ही भागवत है, देवी

भागवत शक्त्यैकनिष्ठों के लिये भागवत का ही रूपान्तर है। जैसे गायत्री मन्त्र को सूर्यपरक या सावित्री देवीमन्त्र माना जाता है तथा ध्यान में भी—

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्त्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपु र्धृतशङ्खचक्रः॥ (सूर्य)

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥ (गायत्रीदेवी)

दोनों श्लोक सन्ध्योपासनायें विशेषतः प्रचलित हैं। शक्तीश्वर एक ही तत्त्व है। मनको एकाग्र करने के लिये शक्ति या ईश्वर या दोनों स्वरूपों में एकात्मभावनापूर्वक आगे बढ़ना चाहिये। हाँ तो देवी भागवत में भी गायत्री महिमा विस्तृत भाव से वर्णित है। भगवान् के द्वारा नारदजी को सन्ध्या-गायत्री वर्णन के सहित दिव्य पूजा-विधि मन्त्र पुरश्चरण गायत्री के विविध प्रयोग ध्यान-कवच, हृदयन्यास गायत्री स्तोत्र, श्रीगायत्रीसहस्र नाम ('अं से क्ष' वर्णानुक्रम से) सुन्दर वर्णन है।

गायत्री शाप विमोचन कीलकका एक भेद है। तात्पर्य यह है कि उन ऋषियों को भी कुछ विशेष रूप से ही दैवी कृपा प्राप्त थी. अनुमानतः ये अंग भी पीछे से साधकों द्वारा जोड़े गये हैं। अतएव सम्मान्य गुरुजनों के परामर्शानुसार ब्रह्मचर्य की विधि सर्वश्रेष्ठ है। गायत्री मन्त्र का जप कर माला पर करना सुविधाजनक है तथा शास्त्रीय विधि हैं। करमाला से जप करते समय अँगुलियाँ अलग-अलग नहीं होनी चाहिये। थोड़ी-सी हथेली मुड़ी रहनी चाहिये। मेरुका उल्लङ्घन और पर्वों की सन्धि (गाँठ) का स्पर्श निषिद्ध है यह निश्चित है कि जो इतनी सावधानी रखकर जप करेगा, उसका मन अधिकांश अन्यत्र नहीं जायगा। हाथ को हृदय के सामने लाकर अँगुलियों को कुछ टेढ़ी करके वस्त्र से उसे ढककर दाहिने हाथ से ही जप करना चाहिये। अनामिका अँगुली के मध्य भाग से लेकर कनिष्ठिका के पोरुओं पर होते हुए तर्जनी के मूलतक दस पोरुओं पर क्रमशः जप करे। मध्यमा के जो दो पर्व (पोरु) शेष रहते हैं, उन्हें माला की सुमेरु समझकर उनका उल्लङ्घन कभी नहीं करना चाहिये, अर्थात् उनको छोड़ देना चाहिये। तथा दाहिने हाथ की अँगुलियों पर दस मन्त्र जपकर बायें हाथ की अनामिका अँगुली के मध्य भाग पर वह एक दहाई की एक संख्या गिने। इसी प्रकार बायें हाथ की अनामिका अँगुली के मध्य भाग से लेकर कनिष्ठा के पर्वों पर होते हुए तर्जनी के मूलतक दस पर्वों पर क्रमशः १० बार गिन ले। इस तरह १०० संख्या हो जाती है। फिर आठ मन्त्र दाहिने हाथ पर पूर्वोक्त क्रम से और जप कर लेना चाहिये।

महाभारत में संध्योपासना की अनुकरणीय निष्ठा वर्णित है। शत्रुओं के तीखे बाणों, गदाओं, तोमरों और शक्तियों से जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग छिद गये थे, वे महारथी अश्वत्थामा, कृपाचार्य और सात्वत

वंशी कृतवर्मा सूर्यास्त के समय एक महावन में जा पहुँचे। रथों से उतरकर उन्होंने अश्वों को मुक्त कर दिया और जल का विधिपूर्वक सस्पर्शन करके संध्योपासना में तत्पर हो गये—

अवतीर्य रथेभ्यश्च विप्रमुच्य च वाजिनः ।
उपस्पृश्य यथान्यायं संध्यामन्वासत प्रभो ॥

सेठ श्रीजयदयालजी कहीं भी होने पर संध्योपासन का समय अवश्य बचा लेते थे। यथाशक्ति कालातिक्रमण भी नहीं करते थे। सवेरा होने पर महामुनि विश्वामित्र श्रीराम-लक्ष्मण से कहते हैं—'राम ! प्रातःकाल की सन्ध्या का समय हो गया है। उठो और नित्यकर्म सम्पादन करो। तब—

तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा नरोत्तमौ ।
स्नात्वा कृतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम् ॥ (वा०रा० १।२३।३)

ऋषि के उदार वचन सुनते ही दोनों वीर स्नानोपरान्त परम उत्तम जपनीय मन्त्र श्रीब्रह्म-गायत्री का जप करने लगे।

ब्राह्मण एक वृक्ष है। उनकी जड़ें संध्या-गायत्री है। वेद शाखा हैं और धार्मिक कृत्य पत्ते हैं। अतएव यत्नपूर्वक जड़ की ही रक्षा करनी चाहिये। यदि मूल ही कट गया तो न वृक्ष रहेगा और न शाखा ही—

विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र संध्या वेदः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम् ।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा ॥
(देवी भाग. ११।१६।६)

द्विजातियों को यावज्जीवन प्रतिदिन संध्या-गायत्री उपासना करते रहना चाहिये। एकमात्र श्रीब्रह्मगायत्री मन्त्र से ही प्रकृति और पुरुष की आराधना हो जाती है अन्त में सूर्यस्वरूप परमात्मा को प्रणामपूर्वक लेखका उपसंहार किया जाता है।

नम ॐकाररूपाय गायत्रीश्वररूपिणे ।
नमस्ते सूर्यदेवाय त्रिदेवस्वरूपाय च ॥
ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

पत्रालय—राजबोड़ासम्वर (सम्बलपुर Orissa)

□

सेहत के लिए आहार पर ध्यान दीजिएगा

स्वास्थ्य से ही जीवन में आनन्द है सुख है इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

१—शुद्ध ताजा दूध पूर्ण पोषक सन्तुलित आहार है दही या मट्ठा भी अन्य चीजों से उत्तम है।

२—विना चोकर निकाले आटे की रोटी एवं कनसमेत हाथ का कुटा चावल ही खाने में श्रेष्ठ रहता है।

३—विटामिन ए के लिए शुद्ध मक्खन हरी सब्जीयों के साथ लिया करें। सन्तरा, मौसम्मी, नीबू जैसी वस्तुयें भी रोज थोड़ी जरूर लिया करें।

४—प्रतिदिन कुछ पत्तीदार सब्जीयाँ, मूली, गाजर, टमाटर का सलाद बनाकर अवश्य लें।

५—नाश्ते में भुने चने, एक पाव दूध लें। अमरूद, नासपाती, खीरा, सेव, ककड़ी, चीकू जो भी मौसमी फल हो दिन में २ बार लें।

६—विटामिन ए के लिए फलाहार, सब्जी, क्रीम, मक्खन, दूध लिया करें।

७—विटामिन बी के लिए चोकर सहित आटे की रोटी लें चोकर मिले आटे की रोटी के साथ यदि कन सहित चावल लें तो उत्तम है। दालें विना छिलका उतारे लें।

८—विटामिन सी हेतु, नीबू, मौसम्मी, सन्तरा, चकोतरा, अमरूद, आंवला टमाटर लीजिए।

९—विटामिन ई के लिए गेहूँ का अंकुर, सोयाबीन का तेल लीजिए। हरी साग सब्जीयां, मैथी पालक, बथुआ, गाजर, मूली में भी कम मात्रा में रहता जरूर है इनमें आयरन भी पर्याप्त रहता है।

१०—कैल्शियम के लिए दूध, मट्ठा, दही श्रेष्ठ साधन है।

११—फासफोरस के लिए दूध, पनीर उत्तम है।

१२—प्रोटीन के लिए दूध, मट्ठा, सोयाबीन, दालें एवं हरी साग भाजियां लिया करें।

१३—शरीर को आपके खाने को पचाने के लियें तरल पदार्थ भी चाहिये पानी दिन में ३ किलो जरूर पीयें।

१४—हवा, पानी, धूप का भरपूर सेवन सेहत के लिए श्रेष्ठ साधन है।

(जीने का आनन्द निरोगी काया में ही छुपा है ये बापू ने लिखा है।)

सत्संग के अनमोल वचन

सन्त परमानन्द, काठी कल्यानो, १३४ डी साकेत मेरठ

१—शक्तिहीन, निर्बल को सताना अच्छा नहीं उसकी दुखी आत्मा की पुकार आपको हमेशा के लिए दुखी कर देगी। अतः हमेशा सरल, उदार, दयावान रहिये।

२—कभी पापी से घृणा मत करो उसके पाप को दूर करने का प्रयास करो यही मानव धर्म है।

३—असन्तोष से ही निराशा और पराजय आती है।

४—झूठे इन्सान को जीवन में कभी भी सन्तोष नहीं मिलता और एक समय वह आ जाता है कि वह खुद ही दुखी होकर जलील होता है।

५—दूसरों को आदर देने वाला, प्यार देने वाला हमेशा ही आदर व प्यार का भागी होता है।

६—मां की ममता का मूल्यांकन कोई नहीं कर सकता मां का क्रोध हीरे की चमक के समान है हीरा केवल चमकता है किन्तु किसी को जलाता नहीं। मां का आदर करो।

७—यदि कुछ पाना चाहते हो तो पहले देना व त्याग करना सीखो।

८—जहां चाह है वहाँ राह है कभी हिम्मत मत हारो।

संकलित अमरवाणी

डा० गीता अग्रवाल

१—यदि किसी का दिल दुखाओगे तो तुम भी चैन से नहीं रहोगे दुखी आत्मा की पुकार खाली नहीं जाती।

२—अभिमान महत्वाकांक्षी मानव में ही विद्यमान रहता है नम्र मानव अहंकार से सदा दूर रहेगा और तभी नम्र मानव सदा सुखी रहता है।

३—जिसने अपनी इन्द्रियों पर काबू पा लिया वही सच्चा इन्सान है जो इन्सान इन्द्रियों के दास हैं उनका जीवन अल्प ही रहता है।

४—कथनी और करनी में अन्तर करने वाले लोग सदैव दुखी रहते हैं उनके अपने भी उनसे दूर हो जाते हैं।

५—मित्र बनाइए। शत्रु भी मित्र बन जायेंगे। और आपका जीवन बड़े आराम से बीतेगा।

६—अपनी आवश्यकतायें कम कीजिए आपका घर परिवार सुखमय रहेगा। जरूरतें बढ़ाकर रिश्वतें लेकर आप अपने को ही दुखी कर रहे हैं जान लें।

नोट—ये संकलन गीता—रामायण और अन्य धार्मिक ग्रन्थों से किया गया है।

आत्मसुधार कैसे हो (सत्संग से)

दयानन्द स्वरूप

★

आज हर ओर अशान्ति है सभी दुखी हैं असन्तोष व्याप्त है नैतिकता-मानवता को हम लोग भूल गए हैं। स्वार्थ हमारे मनों में घर कर गया है पैसा ओर स्वार्थ अथवा कामुकता के हम दास बन गए हैं मानवता रह कहां गयी है हम पद पाकर मनमानी करते हैं निरंकुशता के साथ ये नहीं सोचते ये कुर्सी-पद क्या हमेशा हमारा साथ देगें। कवीर जी ने लिखा—निर्वल को ना सताइए जाकी मोटी हाय—वर्ना दुखी मन की निकली पुकार से आपकी चिता जल जाएगी।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में—

"Life could be quite simple and easy fevery man's mind did not introduce in it useless complications and proud."

महात्मा गाँधी ने लिखा है।

"Give to others best you have and best you will get automatically."

महर्षि दयानन्द के शब्दों में।

"If you live for revengful sprits you cannot survive, Do not see evils, Keep calm & Quite."

मन में सदाचार, आत्मविश्वास, काम का पक्का इरादा वनाकर स्वावलम्बन से वढ़िए। मन में त्याग की भावना रखें आप कभी परेशान नहीं रहेंगे। तुलसीदास जी ने भी लिखा है।

रूखी सूखी रोटी खाकर भी चिन्ता हीन मानव स्वस्थ रहता है और चिन्तायुक्त मानव का स्वास्थ्य घी दूध बादाम भी नहीं सुधार सकते और चिन्तायुक्त ना रहने का नुस्खा स्वामी विवेकानन्द जी के शब्दों में बापू के शब्दों में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के शब्दों में सारगर्भित है आचरण करें।

अनमोल बातें

श्रीआनन्द प्रकाश अग्रवाल

१—वाणी और आचरण मानव के दर्पण हैं।

२—प्रसन्न रहने के दो उपाय हैं आवश्यकतायें कम करते जायें सहनशीलता से अपनी परिस्थितियों के साथ तालमेल वढ़ायें।

३—नम्र रहिए-नम्रता से कठिन कार्य भी आसानी से सुलभ हैं।

४—यदि दूसरों को कष्ट देगें स्वयं भी कष्ट उससे कहीं अधिक पायेंगे।

५—विषम परिस्थिति में भी यदि आप धैर्य. साहस और आत्मविश्वास से काम लेंगे तो आप कभी पराजित न होंगे।

६—प्रगति के लिए स्वावलम्वन पुरुषार्थ और हिम्मत का मार्ग चुनिये।

७—भावनाओं से कर्तव्य को ना तोलें ना ही भावनाओं के आवेग में कर्तव्य पथ से विचलित हों।

८—जीवन में हर क्षण समझौते को प्रवृति अपनाइए कटुता, आलोचना, कथनी कहनी के अन्तर से दूर रहिए वर्ना दुखी रहेंगे।

९—कुर्सी के मद में दूसरों को ना सतावें कुर्सी हमेशा नहीं रहेगी और कष्ट पायेंगे।

१०—नेकी, सहानुभूति, सहायता, दया और त्याग महापुरुषों का आचरण है।

श्रीजगन्नाथ-तत्त्व

—रवीन्द्रनाथ गुरु

श्रीजगन्नाथजी सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ तथा सर्वान्तर्यामी हैं। जगन्नाथत्तत्त्व केवल उड़िया जाति व भारतीय संस्कृतिका ही नहीं, समग्र विश्वका ही गौरव है वह सगुण और निर्गुण उपासना का एक सम्मिश्रण है। सर्वधर्मका सम्मिलित रूपान्तर है। वह साकार एवं निराकार है। वह ब्रह्मा विष्णु महेश्वर है· वही सत्त्व, रज और तम है। ऋग्यजुः सामवेद है तथा जगन्नाथ, वलभद्र एवं सुभद्रा है। श्रीवलभद्रजी कर्मयोग, श्रीमती सुभद्राजी भक्तियोग एवं श्रीजगन्नाथजी ज्ञानयोगके प्रतीक हैं।

पं० पूजनीय श्रीगुरुजी गोलवाल्करजी जगन्नाथजी को एक भिन्नरूपसे दर्शन करते हैं। किसलिये वे इतनी वड़ी बड़ी आँखों से देख रहे हैं ? उनके हाथ नहीं है, पैर भी नहीं है, वह विचित्र भगवान्जी फिर क्या कर सकते हैं ? हाँ वे अव कुछ करना नहीं चाहते हैं। वे नीरवद्रष्टा हैं मानवसमाजको सूचित करते हैं कि—मैं मेरी सृष्टिकी रक्षाके लिए, अधर्ममार्गसे धर्मपथकी ओर लानेके लिए वहुत कुछ कर चुका हूँ। तदर्थ विभिन्नावतार धारण किया हूँ। अव मैं यह देखना चाहता हूँ कि तुम लोग मुझसे क्या सीखे हैं। तुम वर्तमान अपने काम आप ही करो अव मैं केवल देखूँगा—तुम सक्षम हो यानी अपने कार्य के लिये तुम अनुपयुक्त हो ? इसीलिये वे बड़ी-वड़ी आँखों से देख रहे हैं।

महापुरुष श्रीदिवाकरदासजी "श्रीजगन्नाथ"– इस पञ्चाक्षरोंका विशद अर्थ देते हुए लिखे हैं—

श्री—लक्ष्मी, भक्ति प्रेम और शोभन प्रदायिनी शक्ति है। वह संसारकारिणी शक्तिरूपसे विद्यमान है।

ज—ज का अर्थ सर्जन व जन्म का स्थल है। सारी देवतायें जहाँ से ही संभव हुए हैं। देवमन्त्र, योग ज्ञानादि सवका उद्गमस्थान है। ज ही जगन्नाथ विग्रह है एवं स्वयमेव जन्मधारण किये है। ज—जगन्मय और ज्योतिः स्वरूप है। जकार जगन्नाथजी को जो जिस नाम से भी पुकारेगा उन्हें दर्शन कर सकेगा।

ग– 'गकारका अर्थ यह है कि वे गुह्य, गूढ़तत्त्व, गुरुतम एवं सागरसदृश गम्भीर तथा अनन्त हैं। वे गोलक, गर्वगञ्जन और गजोद्धारण जैसे विपत्ति निवारक हैं। दुःखियों के दुःख कष्ट निवारक हैं।

न्ना—'ना' शब्दार्थ निर्विकल्प, निरीह, निराकारब्रह्म, निर्भर, निरालम्बस्थल, नरकनिस्तारण, नित्य महानित्य अविनाशी निर्मल, निर्माय एवं नामरूप हैं।

थ—थ का अर्थ है वे सर्वभूतों में आत्मा, सुदर्शन स्थिरबुद्धि तथा धर्मार्थ काममोक्ष का जन्म-

स्थल है। यहाँ से ही स्थावर, जङ्गम एवं अष्टादश सिद्धियों का प्रादुर्भाव हुआ है। 'थ' अनाथों का नाथ एवं सर्वप्राणियों के हितकारी हैं।

भगवान् जगन्नाथ जी रहस्यमय देव हैं। उपर्युक्त "श्रीजगन्नाथ" नाम में समस्त विषय सन्निहित है। पुनश्च श्रीजगन्नाथ धर्म क्या है, तत्सम्बन्धों में यथार्थ ही कहा गया है कि यह धर्म सनातन धर्म है एवं सम्प्रदाय 'ब्रह्म' है। उसका पूर्णक्षेत्र श्रीपुरुषोत्तमधाम, देवता—श्रीजगन्नाथ, माला—श्रीहरिनाम, तीर्थ-तीर्थराज समुद्र, ध्यान—परब्रह्म, ज्ञान-आत्मज्ञान, भक्ति-नामस्मरण, भाव-समदर्शन, भणोहि-निर्मालय विलास-रहस्यमय एवं विहार-वैकुण्ठ है। इस प्रकार समदर्शीभावापन्न धर्म पृथ्वीतल पर विरल है। इसे सनातन विश्वधर्म कहने से कोई अत्युक्ति नहीं होगा। एक कवि की भाषा में—

जगन्नाथ नाम अटे (ही) अमूल्य पदार्थ है
जगन्नाथ नाम विना सव कुछ व्यर्थ है।
जगन्नाथ नाम तरी भवजलधिका है
जगन्नाथ नाम एकमात्र कर्णधार है।
जगन्नाथ जगन्नाथ जगन्नाथ देव
उन्हींक नाम गानसे उद्धार होइव (होंगे)॥

श्रीजगन्नाथपुरी परमपावन चतुर्धामों में सर्वश्रेष्ठ है। वद्रीनाथजी सत्ययुग का, रामेश्वरजी त्रेता तथा द्वारिका द्वापर के धामरूप में प्रसिद्ध है, किन्तु कलियुग का पावनकारी धाम पुरी ही है "सर्वेषां सर्वक्षेत्राणां राजा श्रीपुरुषोत्तम"

श्रीजगन्नाथजी ने काष्ठ का विग्रह क्यों धारण किया? यह एक लम्वी कथा है। इसका कारण भगवान् की इच्छा ही है, किन्तु भक्तों के अधीन होकर और भक्तों की श्रेष्ठता दिखाते हुए भगवान् ने प्रतिज्ञा की थी—"मैं चित्ररथ गन्धर्व को न मार डालूँ तो मेरा कलियुग में काष्ठ का विग्रह हो। उस ऋषि के अपराध करने वाले गन्धर्व को अर्जुन और सुभद्रा ने अभयदान किया। भगवान् ने भक्तों के सामने हार मानी और वे श्रीक्षेत्र जगन्नाथ में काष्ठविग्रह से प्रतिष्ठित हुए। और भी इस सम्बन्ध में कई कथायें हैं। इसलिये यह क्षेत्र कलियुग क्षेत्र है।*

श्रीजगदीश रथ यात्रा वैदिकमन्त्रावली का जीवन्तभाष्य है। सद्धवद्ध द्वेषविहीन पुण्य जीवनयापन के निमित्त ऋग्वेद संज्ञानसूक्तयों ने मानवसमाज को उद्‌वुद्ध किया गया है। सहस्रों भक्तलोग लक्ष्यस्थल में जाने के लिए एकात्म भाव से रथ को खींचते हैं। अपने अनन्य भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये कातर श्रीजगन्नाथ जी दोनों वाहुओं को पसारे हुए विराजित हैं। भगवान् जगन्नाथ जगद्‌गुरु हैं—

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्‌गुरुः श्रीजगद्‌गुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

---

* 'श्रीवद्रीनाथ दर्शन' ले—श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी पृ. १८

विद्वद्वर महात्मा श्रीसीताराम ओंकारनाथ जी सम्भवतः सन् १९३६ ई. में पुरीधाम में दिन में केवल एक वार भोजन लेने का निर्णय किया, पहले सप्ताह हविष्य, दूसरे सप्ताह फल एवं दूध तीसरे सप्ताह केवल दूध और चौथे सप्ताह से उन्होंने निर्णय ईश्वर पर छोड़ दिया। शाम के समय १० वैशाख को, एक वृत्ताकार ज्योति के मध्य में श्रीजगन्नाथ उनके सामने प्रकट हुए उन्होंने अपना हाथ हिलाते हुए उन्हें आदेश दिया, "जाओ जाओ नाम वितरण करो।" उन्होंने मौन तोड़ा।——जगन्नाथ से यह आदेश पाने के वाद उनकी व्यापक श्रीनाम प्रचार लीला आरम्भ हुई थी। ['Param Katha' March, 1978]

जगन्नाथजी पतितपावन, नीलाचलविहारी, कालिआ, चकाआक्षी पुरुषोत्तम, दीनबान्धव, नीलमाधव कालिआ काछ्नु आदि नामों से उड़ीसा में सुप्रसिद्ध कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुसमर्थ भगवान् हैं।

जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा-भक्तानुग्रह-कातर ईश।
बने दारुमय रूप अनोखे देते नित मङ्गल आशीष॥
सागर-तटपर पुरी-धाम में रहे दयामय नित्य विराज।
करते सवका सहज परमहित, सजे विलक्षण मङ्गल-साज॥
जगन्नाथ जगन्नाथ जगन्नाथ पाहि माम्।
महावाहो महावाहो महावाहो रक्ष माम्॥

॥ जय जगन्नाथ स्वामी ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

घोर अन्ध कूप से निकलने का अति उत्तम उपाय

--मोहनलाल आर्य

अधिकांश मनुष्य ज्ञान में सबको ब्रह्म माना जाता है ऐसा समझकर सम्पूर्ण भ्रम अनर्थ और महामूर्खता में फँसे हैं। क्योंकि व्रह्म को ब्रह्म और जड़ चाण्डाल आदि को जड़ चाण्डाल आदि समझना ज्ञान है 'यह वेद और शास्त्रों का अटल प्रमाण है' फिर ज्ञान में सबको ब्रह्म माना जाता है ऐसा समझने वाले बिना आधार के हैं घरके हैं न घाट के अति बुरी तरह से घोर भ्रम जाल (अति बुरी बला) में फँसे हैं और इसको समझते हैं ब्रह्मज्ञान यह मान्यता महामूर्खों की निकाली हुई है एवं जो सज्जन इस घोर अन्ध कूप में फँसे हैं उनसे मेरी विनीत प्रार्थना है तुरन्त होश में आ जाय।

प्रिय सज्जनों ! गीता अ० ७।१९ काम में तत्वज्ञानी जानते हैं कि—वासुदेव के सिवाय (उत्तम) अन्य कुछ है ही नहीं अतएव ज्ञानी वासुदेव को वासुदेव मानते हैं। जिनको वासुदेव का ज्ञान नहीं है वे तत्वज्ञान रहित अज्ञानी सज्जन ज्ञान में सबको वासुदेव माना जाता है। ऐसा समझकर घोर भ्रमजाल (म हामूर्खता) में फँसे हैं। गीता आ० ७।३ का मर्म भी समझें।

त्रिगुणमयी माया इससे उद्धार चाहने वाला चेतन आत्मा और उद्धार करने वाले ज्ञानस्वरूप परमात्मा इन तीनों के स्वरूप में परस्पर असीम अन्तर है किन्तु तीनों अजन्मा (नित्य) है क्योंकि अनादि (अनन्त) हैं—अन्त रहित हैं अतएव तीनों स्वतन्त्र सत्ता है, इनका उपादान कारण कोई नहीं है यह अटल प्रमाण कठोपनिषद अ० १।२।१८ से भी मिलता है और ब्रह्म में भी किसी प्रकार का परिवर्तन होता ही नहीं तथा अखण्ड भी है एवं तीनों को तीन समझना ज्ञान है विपरीत (उलटा-पलटा) समझना अज्ञान है है यह वेद और शास्त्रों का अटल प्रमाण सारांश तथा सर्वोच्च न्याय सिद्ध सिद्धान्त है।

उक्त तीनों की पृथकता तथा स्वरूप का जिनको ज्ञान नहीं है वे तत्वज्ञान रहित अज्ञानी अनादि को शान्त और अखण्ड ब्रह्म को जगत का उपादान कारण समझ कर उक्त तीनों को ब्रह्म की तीन सत्ता अर्थात् ब्रह्म को ही नाना (जड़ चाण्डाल आदि) और नाना को ब्रह्म मानते हैं किन्तु सम्पूर्ण अनर्थ है इस लिये मानना बनता नहीं अतएव प्रकरणों में माना जाता है ऐसा समझ कर अति गहरी और घोर उलझनों में उलझे हुए हैं।

जगत जड़ खण्ड और विनाशशीलादि है अतः अतः स्वर्ण और स्वर्ण के गहनों की भाँति जगत और ब्रह्म में अभिन्नता देखने वाले घोर अन्धकूप में हैं।

स्वर्ण जड़ और खण्ड है इसलिये आकार प्रकार बन जाता है ब्रह्म में ऐसी युक्ति नासमझ है। जड़ को चेतन और चेतन को जड़ समझना अविद्या है।

तत्वज्ञान रहित अज्ञानी सज्जन, ज्ञान, यथार्थ और न्याय सिद्ध सिद्धान्त के अधिकारी नहीं हैं। किन्तु पक्के ठेकेदार बने हैं।

ज्ञानमयी दृष्टि ब्रह्म को ब्रह्म बताती है, महा अज्ञानमयी दृष्टि सबको ब्रह्म बताती है।

ज्ञान में चाण्डाल को भी ब्रह्म माना जाता है ऐसे भी कई प्रकरण होते हैं—सम्पूर्ण अनर्थ है।

ब्रह्म को ब्रह्म समझना अद्वैत नाना को ब्रह्म समझना द्वैत और अखण्ड ब्रह्म को नाना समझना बनता ही नही सम्पूर्ण भ्रम है—भ्रान्त है।

पो० बामड़ा (सम्बलपुर)

सतसंग को अर्पित

दयानन्दस्वरूप एडवोकेट, बुलन्दशहर

१—झूँठ के पाँव नहीं एक झूँठ निभाने के लिए कितने झूँठ बोलोगे—सत्य सदाँ याद रहेगा—झूँठ जल्दी भूल जाता है। झूँठ के सहारे कब तक अपने को धोखा देना उचित होगा सत्य ही आचरण करो।

२—नम्रता से नम्रता —करुणा से करुणा · प्यार से प्यार परमार्थ से सन्मार्ग और दूसरों की सहायता से आप की सफलता सदां हर क्षेत्र में मिलती है।

३—जो स्वार्थवश ही हर काम करता है वह कभी सुखी नहीं रहता, उसकी सन्तुष्टि भी नहीं हो पाती वह सदां अतृप्त और असन्तोषी रहता है और उसका जीवन आशा के बजाए निराशा में बीतता है।

४—दूसरों को धोखा देने वाला इन्सान हमेशा स्वयं धोखा खाता है जैसा आचरण दूसरों के साथ उसका होता है उससे बदत्तर उसके साथ होता है। नेकी बदी सभी इसी जीवन में पाकर जाना होता है।

५—जैसा बीज हम डालेंगे वैसा ही पौधा लगेगा फल आएगा उसी प्रकार जैसे कर्म करेंगे फल ही हमें मिलेगा स्वाभाविक है। कोई बदल नहीं सकता।

६—हारिये ना हिम्मत कभी बिसारिये ना राम। प्रयास करते रहिए मनचाहा फल जरूर मिलेगा आशावादी मानव की हमेशा जीत होती है।

७—ऐसे काम करो जो शान्ति मिले सब याद करें यदि दूसरों को दुखी करोगे तो चैन की नींद तुम भी नहीं सो पाओगे। देखो घमण्ड कभी किसी का नहीं रहा। नम्र बनो।

卐

उठो जवानो ! भारत के हित में लेकर तलवार

– सत्येन्द्रकुमार मिश्रा

ऋषि जीवन है सजग सलोना, संस्कृति का आधार ।
उठो जवानो ! भारत के हित, लेकर में तलवार ॥

बन्धन मुक्त करो प्रकृति को,
स्मरण अतीत निहित आकृति को,
कौन समर्थ रोक मन गति को,
करे घृणित व्यवहार........उठो जवानो !

धर्मस्थल देवालय रोते,
जहाँ कुपुत्र पाप नित धोते,
तुम वैभव का स्वप्न सँजोते,
देख दुखी संसार........उठो जवानो !

पृथकवाद, हिंसा, का नारा,
भूल चुके क्या लक्ष्मी, तारा,
जहँ सुभाष—आजाद हमारा,
करने को उद्धार........उठो जवानो !

भक्ति, ज्ञान, विज्ञान, योग, वल,
धर रहते निर्भय हम प्रतिपल,
चल न सके शत्रु का कुछ छल,
सुनें प्रेम झनकार........उठो जवानो !

अवला, वाल रटें रघराई,
गीता—राम चरित मन लाई,
हों न अशक्त जरठपन पाई,
सन्मुख नन्दकुमार........ उठो जवानो !

सात्विक सद्गुण सहित विवेकी,
लोभ न लख लंका सोने की,
भारतीय 'सत्येन्द्र' अनेकी,
ईश भजन सुखसार........उठो जवानो !

C/o श्रीजगदम्बा निकेतन आँतेला (३०३१११) जि०जयपुर–राज०